P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-5* January- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन

Comparative Study of Personality of Students of Government And Non-Government Secondary Schools

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 27/01/2021, Date of Publication: 28/01/2021

घन्सराम चौरिया
रिसर्च स्कॉलर
शिक्षा विभाग
राधा गोविंद विश्वविद्यालय,
रामगढ़, झारखंड, भारत

,

यू.एस.गुरु
पर्यवेक्षक एवं प्रोफेसर,
शिक्षा विभाग
राधा गोविंद विश्वविद्यालय,
रामगढ़, झारखंड, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य है– शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थीयों का व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। विद्यार्थीयों के विकास के लिए अनेक पहलु होते हैं जैसे– शारीरिक व्यक्तित्व का विकास, मानसिक व्यक्तित्व का विकास, समाजिक व्यक्तित्व का विकास, नैतिक व्यक्तित्व का विकास एवं भावनात्मक व्यक्तित्व का विकास आदि होता है। बालकों के व्यक्तित्व के विकास में किशोरावस्था एक महत्त्वपूर्ण आवस्था है। यह बाल्यावस्था और प्रोढ़ावस्था के मध्य परिवर्तन काल है। बालकों में शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, समाजिक और अध्यात्मिक रूप से व्यक्तित्व का विकास होता है। शोध अध्ययन के लिए छिन्दवाड़ा जिला न्यादर्श के रूप में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के 300 विद्यार्थीयों को लिया गया है। जिसमें 150 शासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राएं को एवं 150 अशासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राएं को लिया गया है। जिससे विद्यार्थीयों के व्यक्तित्व का आंकलन एवं मापन किया जा सके। व्यक्तित्व के अन्तर्गत अनेक प्रकार के शीलगूणों का वर्णन किया गया है। प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व अच्छा एवं उत्तम होना चाहिए। प्राचार्य का व्यक्तित्व अच्छा एवं उत्तम होना चाहिए। शिक्षक का व्यक्तित्व भी अच्छा एवं उत्तम होना चाहिए। और छात्र–छात्राएं का व्यक्तित्व भी अच्छा एवं उत्तम होना चाहिए।

The main objective of the research study presented is the all-round development of personality of the students of government and non-government secondary schools. There are many aspects for the development of students, such as - development of physical personality, development of mental personality, development of social personality, development of moral personality and development of emotional personality etc. Adolescence is an important stage in the development of children's personality. This is the transition period between childhood and childhood. Personality develops in children physically, mentally, emotionally, socially and spiritually. 300 students of government and non-government schools have been taken as Chhindwara District Nyadarshas for research studies. In which 150 students of government schools and students of 150 private schools have been taken. So that students' personality can be assessed and measured. Many types of cycling have been described under personality. The personality of every person should be good and good. The principal's personality should be good and good. The personality of the teacher should also be good and good. And the personality of the students should also be good and good.

मुख्य शब्द : शासकीय एवं अशासकीय, व्यक्तित्व, किशोरावस्था, सर्वांगीण विकास, कल्याण।
Government And Non-Governmental, Personality, Adolescence, All-Round Development, Welfare.

प्रस्तावना

शिक्षा मानव के गुणों को विकसित करने की प्रक्रिया है, इसके द्वारा मानव की अंतर्निहित योग्यताओं को विकसित करके समाज सम्मत बनाया जाता

है। शिक्षा ने उसे अपने वातावरण से अनुकूलन करने में सहायता देती है, वरन उसके व्यवहार में ऐसे वांछनीय परिवर्तन भी करती है जिससे वह अपना और अपने समाज का कल्याण करने में सफल होता है। शिक्षा इन कार्यों को संपन्न करके ही सच्ची शिक्षा कहलाने की अधिकारिणी हो सकती है।

डॉ॰ राधा कृष्णन्न के अनुसार शिक्षा को मनुष्य और समाज का निर्माण करना चाहिए इस कार्य को किये बिना शिक्षा अनुर्वर और अपूर्ण है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसारः मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति करना की शिक्षा है।

गाँधी जी के अनुसारः मनुष्य से मेरा तात्पर्य इस प्रक्रिया से है, जो बालक और मनुष्य के शरीर मन तथा आत्मा के रूपों का उत्कृष्ट एवं सर्वांगीण विकास करें। शिक्षा का कार्य बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। बालक के व्यक्तित्व के कई पहलू होते हैं जैसेः शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक एवं भावनात्मक। शिक्षा द्वारा व्यक्ति के इन सभी पहलुओं का संतुलित विकास होना चाहिए अतः शिक्षा का कार्य बालक के व्यक्त्वि का सर्वांगीण विकास होना चाहिए। अतः शिक्षा का कार्य बालक के व्यक्तित्व का विकास करना है और शिक्षा की योजना में बालक के सर्वांगीण विकास की व्यवस्था होना चाहिए।

व्यक्तित्व के विकास में किशोरावस्था एक महत्वपूर्ण अवस्था है, यह बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था के मध्य परिवर्तन काल है, जो आधुनिक व विशिष्टीकृत होते हुए भी सामाजिक जीवन की देन है। किशोर बालकों के व्यक्तित्व विकास के लिए विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाएँ, खेल–कूद, वाद–विवाद प्रतियोगिताएं, एन॰सी॰सी॰, कार्यक्रम आदि आयोजित कराये। विद्यालयों द्वारा देश शैक्षिक भ्रमण का भी आयोजित किये जाये जिससे बालकों में देश के कई राज्यों के भ्रमण के द्वारा विभिन्न संस्कृतियों का ज्ञान हो सकेगा। इस प्रकार बालकों का व्यक्तित्व विकास ठीक तरह से हो सकेगा।

आज युवावस्था में आने कि लिए परिपक्वता, गुण, कौशल और विशिष्टता प्राप्त करन आवश्यक हो गया है क्योंकि इसके बिना उसके जीवन का निर्वाह कोई आधार बनता है न वह समाज में सम्मान जनक स्थिति बना सकता है। विद्यालय और घर में समायोजन की समस्या को गहनता से हल करने के लिए किषोरों का द्वंदात्मक एवं विद्रोही व्यवहार को प्रेरित करता रहा है। बालकों की समस्याओं एवं उनके व्यक्तित्व समायोजन पर अधिक जोर दिया जा चुका है।

सामान्य रूप में यह माना जा सकता है कि किसी भी व्यक्ति का विशिष्टतम लक्षण ही उसका व्यक्तित्व होता है। यह उसके व्यवहार, अभिरूचि, शारीरिक रचना, बौद्धिक स्तर, चरित्र तथा इसी प्रकार के स्पष्ट लक्षणों से मिलकर बनता है। इस प्रकार व्यक्तित्व शब्द से सम्पूर्ण व्यक्ति का आभास होता है। इसी आधार पर हम अनेक व्यक्तियों को हँसमुख, आकर्षक, प्रभावशाली, डरपोक, चुप्पा, दब्बू आदि मान लेते हैं। कुछ समय तक दैनिक सामाजिक जीवन में व्यक्ति के व्यवहार को देखने और समझने के बाद ही यह धारणायें बनती हैं।

परन्तु वैज्ञानिक मनोविज्ञान व्यक्ति का अध्ययन अधिक विश्लेषण के आधार पर करता है। सम्पूर्ण व्यक्ति के व्यवहार को देखने या समझने से जो धारणायें हम अधिकतर बना लेते हैं, उनका स्थान वैज्ञानिक विश्लेषण में नहीं है। इस प्रकार यदि कोई व्यक्ति मनोविज्ञान की प्रयोगशाला में अध्ययन हेतु प्रस्तुत किया जाता है तो उसके व्यक्तित्व को समझने के लिए अनेक परीक्षण, साक्षात्कार और प्रयोग करने की आवश्यकता पड़ेगी तथा एक साथ सम्पूर्ण व्यक्ति का अध्ययन न करके उसके व्यक्तित्व के विभिन्न अंशों का अध्ययन किया जायेगा। इस प्रकार व्यक्तित्व के विभिन्न पक्ष मनोवैज्ञानिक के लिए विश्लेषण की सामग्री बन जायेंगें यद्यपि मनोवैज्ञानिक यह भली–भांति समझता है कि विभिन्न अंश सम्पूर्ण व्यक्तित्व के संदर्भ में ही समझे जा सकते हैं।

इस प्रकार व्यक्तित्व के विकास के लिए विद्यालयों में इस प्रकार का वातावरण का निर्माण किया जाये जिसमें बालक का संपूर्ण रूप से व्यक्तित्व का विकास हो सके। जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक रूचि का व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण योगदान हो सके।

व्यक्तित्व का अर्थ

मनोवैज्ञानिक भाषा में व्यक्ति अपने आप में जो कुछ भी है वही उसका व्यक्तित्व है। अपने प्रति और दूसरों के प्रति किए जाने वाले व्यवहार का यह एक समग्र चित्र है। इसमें व्यक्ति के पास शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से जो कुछ भी होता है वह सभी सम्मिलित होता है। थोड़े शब्दों में व्यक्तित्व वह सब कुछ है जो एक व्यक्ति के पास होता है।

इस प्रकार से निश्चित रूप से 'व्यक्तित्व' शब्द बाह्य रूप, आकृति और व्यवहार से अधिक गूढ़ अर्थ सजोये हुए है जिसे निष्चित शब्दों में परिभाषित करना एक कठिन कार्य है। फिर भी बहुत–से मनोवैज्ञानिकों ने अपने–अपने तरीको से इसे परिभाषा में बांधने का प्रयत्न किया है। इनमें से कुछ प्रयत्णों की चर्चा नीचे की जा रही है।

जे॰बी॰ वाटसन–''विश्वसनीय सूचना प्राप्त करने के दृष्टिकोण से काफी लंबे समय तक वास्तविक निरीक्षण या अवलोकन करने के पश्चात् व्यक्ति में जो भी क्रियाएँ अथवा व्यवहार को जो भी रूप पाया जाता है, उसे उसका व्यक्तित्व कहा जाता है।

इस प्रकार वाटसन ने व्यवहारवादी (Behaviourist) होने के कारण व्यवहार पक्ष पर बल देते हुए क्रिया व्यक्ति के घनिष्ठ सम्पर्क में आने पर हम उसके ऊपर जो भी प्रभाव छोड़ते हैं अर्थात् वह जैसी भी हमें समझता है उसी को व्यक्तित्व कहा है।

मार्टन प्रिंस– उसने वंशानुक्रम और वातावरण दोनों की भूमिका को स्वीकार करते हुए व्यक्तित्व की इस प्रकार परिभाषा दी है, ''व्यक्तित्व व्यक्ति की सभी प्रकार की जन्मजात प्रकृति, आवेगी, प्रवृत्तियों, इच्छाओं एवं मूल–प्रवृत्तियों और अनुभवों के द्वारा अर्जित बातों का योग है।''

जी॰ डब्ल्यू॰ ऑलपोर्ट– व्यक्तित्व की 49 विभिन्न परिभाषाओं की समीक्षा करने के बाद ऑलपोर्ट ने अपने

विचार इस प्रकार व्यक्ति किए–''व्यक्तित्व व्यक्ति में उन मनोदैहिक व्यवस्थाओं का गतिशील संगठन है जो कि वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है।

यद्यपि ऑलपोर्ट ने व्यक्तित्व की एक पूर्ण परिभाषा देने का दावा किया है लेकिन उसने भी संगठन, गतिशील, मनोवैज्ञानिक व्यवस्था, अपूर्ण समायोजन और वातावरण आदि शब्दों का प्रयोग कर दूसरों की तरह व्यक्तित्व का केवल वर्णन ही किया है। केवल सिद्धांत पक्ष पर बल देने और व्यावहारिक अथवा गतिषील प्रत्ययों (Concept) के रूप में इसका वर्णन करने से व्यक्तित्व को सही रूप में समझना कठिन है।

आर॰बी॰ कैटल और आईजैक जैसे आधुनिक मनोवैज्ञातिक का भी यही दृष्टिकोण है। वे पूरी तरह यह अनुभव करते हैं कि अगर व्यक्तित्व का प्रदर्शन, मापन और अंकन नहीं किया जा सकता तब इसे मनोविज्ञान के स्थान पर दर्शनशास्त्र अथवा कला का विषय माना जाना चाहिए। व्यक्तित्व के अर्थ को स्पष्ट करने के संदर्भ में उन दोनों के विचार निम्न हैं–

आर॰बी॰ कैटन– ''व्यक्तित्व वह है, जिसके द्वारा हम ये भविष्यवाणी कर सकते हैं कि कोई व्यक्ति किसी परिस्थिति में क्या करेगा।''

एच॰जे॰ आईजैंक–''व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, स्वभाव, बुद्धि और शारीरिक बनावट का थोड़ा–बहुत ऐसा स्थायी और स्थिर संगठन है जो वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है।''

साहित्यावलोकनः–

शिक्षा के द्वारा ही समाज की दिशा और दशा का निर्धारण होता है और कहा जाता है कि किसी देश में बड़े परिवर्तन करना होतो शिक्षा के साथ–साथ विद्यार्थियों के अध्ययन केन्द्र व माता–पिता को एवं विद्यालयों के नियमों व खान–पान, रहन–सहन आदि में परिवर्तन की अवष्यकता होती है। जिसके कारण बालक–बालिकाएं के व्यक्तित्व में परिवर्तन आ जाता है। 2014 के आम चुनाव में जो सरकार आई उसने विद्याथियों के व्यक्तित्व से संबंधित 11 सदस्यों की कमेटी बनाई और उस कमेटी ने 2019 में शिक्षा नीति से संबंधित नया प्रारूप तैयार किया। इस नई शिक्षा नीति में विद्याथियों के व्यक्तित्व के संबंध में बहुत कुछ कहा गया। जिसमें बालकों के मिड डे मील भोजन रहन–सहन एवं पोषाक से संबंधित अनेक नियम बनाये गए। जिससे बालकों का व्यक्तित्व में निखार आ सके। व्यक्तित्व से संबंधित शाम्भीपूनम 1989 में आंध्रप्रदेश के श्री सत्यसांई उ॰मा॰ विद्यालय के तथा केन्द्रीय विद्यालयों में मूल्यों एवं कुछ व्यक्तित्व विषयक चरो का अध्ययन किया जिसमें तीनों समुह के मूल्यों एवं व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले चरो में अन्तर पाया गया। डेविड एवं अन्य 2018 इन्होने आत्म सम्मान अधिगम से लगाव से उत्पन्य व्यक्तित्व समस्याओं पर विद्यालयीन वातावरण के व्यवहार में अध्ययन किया जिसमें विद्यालयीन वातावरण से संबंधित विद्यालयों के किषोरों में अधिगम के प्रति लगाव कम अनुषासनात्मक समस्याएं पढ़ाई में ध्यान कम लगना एवं आत्म सम्मान में कमी जैसी समस्याएं पाई गई। वहीं अनुकूल विद्यालयीन वातावरण वाले किशोरों के व्यक्तित्व पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया। चतुर्वेदी आर॰पी॰ 2017 ने जबलपुर संभाग के विद्याथियों के व्यक्तित्व प्रतिमान एवं प्रतियोगात्मक पर विद्यालयीन वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया जिसमें शिक्षक के व्यवहार के आलावा विद्यालयीन वातावरण के भौतिक कारक भी विद्याथियों के व्यक्तित्व पर प्रभाव डालते हैं। और व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं प्रतियोगात्मक व्यवहार पर अच्छे विद्यालयीन वातावरण का सकारात्मक प्रभाव परता है।

अध्ययन की उद्देश्य

1. शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्रों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व को तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्रों के व्यक्तित्व तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

1. शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्रों के व्यक्तित्व के स्तन पर सार्थक अंतर नहीं है।
2. शासकीय छात्रोओं एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व के स्तर पर सार्थक नहीं है।
3. शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व के स्तन पर सार्थक अंतर नहीं है।
4. शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्रों के व्यक्तित्व के स्तन पर सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत छिन्दवाड़ा जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 9वीं एवं 10वीं के विद्यार्थियों को सम्मलित किया गया है। जिसमें 150 छात्र एवं 150 छात्राएं सम्मिलित हैं।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में व्यक्तित्व मापने के लिये डॉ॰ अषोक वर्मा एवं डॉ॰ श्रीमति मीनू अग्रवाल द्वारा निर्मित व्यक्तित्व मापनी का प्रयोग किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का सारणीयन–

तालिका क्रमांक 1

शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्रों के व्यक्तित्व की तुलना

क्र॰	आयाम	शासकीय छात्र		अशासकीय छात्र		क्रांतिक अनुपात	व्याख्या	
		M	SD	M	SD		0.05	0.01
1.	व्यक्तित्व	58.20	6.50	57.41	7.50	0.987	NS	NS
	कf 298						1.97	2.59

तालिका क्रमांक 1 में शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्रों के व्यक्तित्व की तुलना को दर्षाया गया है। व्यक्तित्व पर शासकीय छात्रों का मध्यमान (58.20) एवं अशासकीय छात्रों का मध्यमान (57.14) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर ''टी''पर सार्थक अंतर नहीं है।

अतः शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व का स्तर समान है।

तालिका क्रमांक 2

शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व की तुलना

क्र॰	आयाम	शासकीय छात्राएँ		अशासकीय छात्राएँ		क्रांतिक अनुपात	व्याख्या	
		M	SD	M	SD		0.05	0.01
1.	व्यक्तित्व	61.40	7.56	58.60	6.42	3.46	S	S
	कि298						1.97	2.59

तालिका क्रमांक 2 में शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व की तुलना को दर्षाया गया है। व्यक्तित्व पर शासकीय छात्राओं का मध्यमान (61.40) एवं अशासकीय छात्राओं का मध्यमान (58.60) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर ''टी'' पर सार्थक अंतर नहीं है।

अतः शासकीय छात्राओं का व्यक्तित्व का स्तर अशासकीय छात्राओं से उच्च है।

शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका क्रमांक 3

शासकीय छात्राएँ एवं अशासकीय छात्रों के व्यक्तित्व की तुलना

क्र॰	आयाम	शासकीय छात्राएँ		अशासकीय छात्र		क्रांतिक अनुपात	व्याख्या	
		M	SD	M	SD		0.05	0.01
1.	व्यक्तित्व	58.20	6.50	58.60	6.42	0.536	NS	NS
	कि298						1.97	2.59

तालिका क्रमांक 3 में शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व की तुलना को दर्षाया गया है। व्यक्तित्व पर शासकीय छात्राओं का मध्यमान (58.20) एवं अशासकीय छात्राओं का मध्यमान (58.60) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर ''टी'' पर सार्थक अंतर नहीं है।

अतः शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व का स्तर समान है।

तालिका क्रमांक 4

शासकीय छात्राएँ एवं अशासकीय छात्रों के व्यक्तित्व की तुलना

क्र॰	आयाम	शासकीय छात्राएँ		अशासकीय छात्र		क्रांतिक अनुपात	व्याख्या	
		M	SD	M	SD		0.05	0.01
1.	व्यक्तित्व	61.40	7.56	57.41	7.50	3.99	S	S
	कि298						1.97	2.59

तालिका क्रमांक 4 में शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्रों के व्यक्तित्व की तुलना को दर्षाया गया है। व्यक्तित्व पर शासकीय छात्राओं का मध्यमान (61.40) एवं अशासकीय छात्रों का मध्यमान (57.41) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर ''टी'' पर सार्थक अंतर है।

अतः शासकीय छात्राओं का व्यक्तित्व का स्तर अशासकीय छात्रों से उच्च है।

निष्कर्ष

1. शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व का स्तर समान है।
2. शासकीय छात्राओं का व्यक्तित्व का स्तर अशासकीय छात्राओं से उच्च है।
3. शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व का स्तर समान है।
4. शासकीय छात्राओं का व्यक्तित्व का स्तर अशासकीय छात्रों से उच्च है।

परिकल्पना परीक्षण

1. शासकीय छात्राओं एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व का स्तर समान है। अर्थात् सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।
2. शासकीय छात्राओं का व्यक्तित्व का स्तर अशासकीय छात्राओं से उच्च है। अर्थात् सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।
3. शासकीय छात्रों एवं अशासकीय छात्राओं के व्यक्तित्व का स्तर समान है। अर्थात् सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।
4. शासकीय छात्राओं का व्यक्तित्व का स्तर अशासकीय छात्रों से उच्च है। अर्थात् सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *गैरेट, एच॰ई (1981) मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी दषम् संस्करण, बी॰एफ॰एण्ड संस बाम्बे।*
2. *सिंह, अरूण कुमार (2009) शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, पी॰एच॰डी॰ पटना।*
3. *हरलाक, ई॰बी॰ (1979) डेवलपमेन्टल साइकोलाजी, टी॰एम॰ एवं पब्लिकेषन,नई दिल्ली।*
4. *आई॰ए॰, गेट्स एवं जरसील (1958) शिक्षा मनोविज्ञान, न्यूयार्क।*
5. *कपिल, एच॰ के॰ (2009) सांख्यिकीय के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।*

6. पाठक, पी॰डी॰ (2008) शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
7. मंगल, एस॰ के॰ (2010) शिक्षा मनोविज्ञान पी॰एच॰आई॰ लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
8. भटनागर, सुरेष (2010) शिक्षा मनोविज्ञान, आर॰लाल बुक डिपो, मेरठ।
9. वुडवर्थ आर॰सी॰ एवं मारक्विस डी॰जी॰ (1947) शिक्षा मनोविज्ञान, एषिया पब्लिषर्स, बाम्बे।
10. वरनॉन, पी॰ई (1962) पर्सनॉलिटी टेस्ट एण्ड एसेसमेंट, मेथ्यू एण्ड कंपनी, लंदन।
11. ऑलपोर्ट जी॰ डब्ल्यू (1948) साइक्लाजिकल इंटरप्रिटेषन, होल्ट एण्ड कंपनी, न्यूयार्क।
12. पाण्डे, आर॰एस॰ (2001) एजूकेषन साइक्लाजी, आर॰ लाल बुक डिपो, मेरठ।
13. माथूर एस॰एस एवं पाठक पी॰डी॰ (2016) अधिगम शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेषन, आगरा।
14. श्रीवास्तव डी॰एन॰ (2019) अधिगम का आंकलन विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
15. राय मृदुला (2018–19) शिक्षा मनोविज्ञान अग्रवाल पब्लिकेषन आगरा।
16. पाठक पी॰डी॰ (2018) शिक्षा मनोविज्ञान विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।